चित्र: कैरन हैडॉक

जमावट

कालू राम शर्मा

बाग में स्कूल के बच्चों को देखकर, बकरी चरा रहा बच्चा उनकी ओर टकटकी लगाए हुए था। मगर वह इन बच्चों के नज़दीक नहीं आ रहा था। नारंगी और कक्षा के लड़के मास्साब के चारों ओर खड़े थे। मास्साब बच्चों को कुछ समझाने की कोशिश कर रहे थे। बकरी चराने वाले बच्चे को दूर खड़ा देख, मास्साब ने उसे इशारा कर अपनी ओर बुलाया मगर वह आना नहीं चाह रहा था। मास्साब ने एक बार फिर उसे प्यार से पुकारकर बुलाया।

बकरी चराने वाला लड़का उनके पास तो आ गया मगर फिर भी स्कूल के बच्चों के घेरे में नहीं आया। बच्चे, बकरी चराने वाले उस लड़के को अच्छे से जानते थे। उसका नाम छीतर है। छीतर बच्चों का दोस्त है। बाग में अगर किसी पेड़ पर चढ़ना हो तो छीतर उसमें अव्वल रहता। पेड़ों पर चढ़कर जामुन तोड़ने और ऐसे तमाम कामों में उसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता।

मास्साब ने छीतर की ओर कुछ कदम बढ़ाए और उसके गले में हाथ डालकर, उसे अपनी बगल में खड़ा कर लिया। “तो छीतर भी हम सबके साथ रहेगा, मगर अपनी बकरियों का खयाल रखते हुए। ठीक है न! चलो, अब सब अपने-अपने काम में लग जाओ।”

करना क्या है?

कक्षा में परिभ्रमण की तैयारी एक दिन पहले ही की जा चुकी थी। परिभ्रमण कहाँ करना है, यह सुझाव भी बच्चों ने ही दिया था कि बाग में जाना बेहतर होगा। परिभ्रमण में क्या करना है, इस पर बच्चों के साथ बातचीत की जा चुकी थी।

मास्साब ने दोहराया, “सबसे पहले

पेड़-पौधों पर लगी पत्तियों की 'जमावट' को देखना है। क्या पत्तियाँ हर पौधे और हर पेड़ पर किसी खास ढंग से जमी होती हैं या यूँ ही यहाँ-वहाँ उग आती हैं?"

मास्साब की यह बात बच्चों को समझ में नहीं आई थी। हालाँकि, इन बच्चों का स्कूल के बाद का काफी सारा वक्त इसी बाग में खेलने में बीतता है, मगर अभी भी उनको समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर परिभ्रमण के दौरान करना क्या है।

नारंगी के दिमाग में चल रहा था कि पत्तियों की 'जमावट' को आखिर देखना कैसे है। वह तो 'जमावट' नामक उस शब्द में ही उलझी हुई थी। वह सोच रही थी कि इसके बारे में मास्साब से कैसे पूछे। फिर सोचा कि थोड़ी देर रुका जाए; कोई और मास्साब से पूछेगा तो उसे पता चल ही जाएगा। टोलियों से आ रहे 'जमावट', 'जमावट' जैसे शब्द बाग में गूँज रहे थे। नारंगी सोच में पड़ गई कि उसकी माँ हमेशा घर में बरतनों, कपड़ों और सामानों को जमाने की बात करती रहती है। कुछ कामों में उसकी माँ 'नारंगी ये कर, नारंगी वो कर' की रट लगाती रहती है। ऐसे में कई बार कपड़े-बरतन और किताबों को जमाने के चक्कर में उसे माँ की डाँट भी खानी पड़ती है।

आखिरकार, भागचन्द्र ने मास्साब को अपनी ओर आने का इशारा किया। मास्साब भागचन्द्र की टोली के पास गए। भागचन्द्र की टोली में से शाकिर ने पूछा, "सर, जमावट क्या होती है?"

मास्साब थोड़ी देर तक सोचते रहे। वे नाराज़-से लग रहे थे। मगर वे अपने आपको सँभालकर, सहज होते

हुए बोले, "हाँ, रुको तो...। भई, अगर जमावट का मतलब नहीं समझ पा रहे हो तो पत्तियों की जमावट को क्या खाक समझोगे।"

समझ नहीं आया

बाल वैज्ञानिक नामक पुस्तक में पत्तियों की जमावट को लेकर चित्र बने थे। ये चित्र पत्तियों की जमावट को समझने में मददगार तो थे, मगर जब बच्चे हकीकत में पेड़-पौधों पर लगी पत्तियों का अवलोकन करते तो उन्हें कुछ फर्क ही दिखाई देता। यह फर्क पत्तियों की बनावट या आकार की वजह से हावी हो जाता। जैसा चित्र में दिखाया होता, उससे सम्बन्ध स्थापित करने में दिक्कत आ जाती।

पत्तियों की जमावट	पौधों का नाम

मास्साब किताब व बच्चों के बीच मध्यस्थ की भूमिका में थे। यह मध्यस्थता अक्सर निहायत ज़रूरी साबित होती।

टोलियों में सन्नाटा छा गया था। मगर फिर सभी हिम्मत करके एक साथ बोले, "नहीं आया समझ में।" मास्साब फिर से सोच में पड़ गए कि वे तो कक्षा में सब कुछ समझा चुके थे। अब उनको गहराई-से एहसास हुआ कि वाकई में बच्चों को समझ में नहीं आया। उन्होंने ज़ोर-से कहा, "सभी बच्चे अपना काम छोड़कर यहाँ आ जाएँ। ...मैं कहता हूँ कि...।"

मास्साब की नाराज़गी भरी आवाज़ सुनकर सभी बच्चे उनके नज़दीक आ चुके थे। भागचन्द्र ने सफाई देते हुए फिर से कहा, "समझ में नहीं आया।"

मास्साब अब एकदम सामान्य थे – "अरे भई, चुप रहो अब। समझ में आ गया सब कुछ। देखो...।" इतना कहकर मास्साब ने सबकी ओर ध्यान से देखा। "देखो, पहले यह समझ लें कि जमावट का मतलब क्या है।"

डमरू बोला, "हाँ, कोई चीज़ कैसे जमी होती है।"

मास्साब डमरू की ओर घूमकर बोले, "कैसे... कैसे देखोगे जमावट?"

नारंगी हँसते हुए बोली, "आँखों से देखेंगे।"

मास्साब सिर खुजाते हुए बोले, "वो तो ठीक है। मगर आँखों से देखोगे क्या?"

मास्साब ने एक डाली पर लगी पत्ती की ओर इशारा किया। “देखो, इस डाली पर पत्ती कैसे लगी है, ये देखना है। अब दूसरे किसी पेड़ या पौधे की डाली को देखो। उसमें क्या दिख रहा है। है न फर्क दोनों की जमावट में? अब तुम्हारे पास तो किताब भी है। किताब में जो चित्र बना है, उसे ध्यान से देखो कि पत्तियाँ कैसे जमी हुई हैं। बस... ऐसे देखते जाओ।”

भागचन्द्र सिर हिला रहा था मानो उसको सब कुछ समझ में आ चुका हो। “चलो, तो हमको इस तरह से पत्तियों की जमावट को देखना है।”

बता बकरी, जमावट क्या है!

सभी टोलियाँ पत्तियों के अवलोकन में जुट गईं। उधर नारंगी देख रही थी कि एक बकरी काँटेदार झाड़ी में से पत्तियों को चुन-चुनकर खा रही है। वह सोच रही थी कि आखिर कैसे बकरी काँटों के अन्दर मुँह डालकर, बड़ी तरकीब से पत्तियों को खा लेती है। नारंगी को उस वक्त, बकरी को काँटों में से पत्तियों को चुन-चुनकर खाता देख, कई दिनों पहले बेर तोड़ने वाली बात याद आ गई। एक दिन जब वह बेर तोड़ रही थी तो उसे ज़ोर-से काँटा चुभा था। उसे याद आया कि किस तरह काँटे के उँगली के अन्दर ही टूट जाने से उँगली में मवाद पड़ गया था। कोई पन्द्रह-बीसेक दिन लगे ही थे ठीक होने में।

यह सब याद करते हुए फिर से नारंगी ने बकरी को देखा, मगर वह मिमियाते हुए उससे दूर जा चुकी थी।

नारंगी अपनी टोली में जाकर, पत्तियों की जमावट के अवलोकन में लग गई। मास्साब ने स्कूल में भी बताया था कि पत्तियों की जमावट का अवलोकन ध्यान-से करना है। नारंगी महसूस कर रही थी कि ये बकरी तो रोज़ ही तरह-तरह की पत्तियाँ खाती है। उसको पत्तियों और काँटों की जमावट के बारे में ज़रूर सब कुछ पता होगा। एक बार तो नारंगी ने सोचा कि वह बकरी के कान में धीरे-से जाकर पूछे, “बता मेरी बकरी, पत्ती की जमावट क्या है!” और बाग-भर के पेड़-पौधों के पत्तों की जमावट के बारे में बकरी उसे बता दे और वो अपनी कॉपी में लिख ले। नारंगी ने मन-ही-मन सोचा कि बकरी में ऐसी समझ कहाँ! बकरी तो बोल भी नहीं सकती।

नारंगी ने अपनी टोली में कहा,

"बकरी पत्तियों को अच्छी तरह से पहचानती होगी।" टोली के सदस्यों ने नारंगी से कहा, "पहले तू तो पहचान। फिर बकरियों की बात कर!" इतना कहकर बाकी के सदस्य पत्तियों के अवलोकन में खो गए।

नारंगी फिर से सोच में डूब गई। तोते तो बकरी से भी छोटे हैं। फिर वे भी तो केरी, जामुन और सभी पेड़ों को पहचान लेते हैं। उसे एहसास हुआ कि सोचने के चक्कर में कहीं ऐसा न हो कि वह अपने अवलोकन के काम में पीछे रह जाए। वह अब

एक और समस्या में फँस चुकी थी। उसके दिमाग में घूम रहा था कि मास्साब कभी तो 'पेड़' कहते और कभी 'पौधा' और कभी 'पेड़-पौधे'। और गाँव के लोग तो 'झाड़' कहते हैं। ये चक्कर क्या है?

पेड़, पौधे, झाड़

नारंगी ने अपनी टोली के चन्दर से जब यह बात पूछी कि पेड़ और पौधे में क्या अन्तर है, तो वह भी कुछ देर तक सोच में पड़ गया। वह इतना ही बोला, "झाड़... झाड़ हैं ये सब।"

नारंगी ने सोचा कि क्यों न हिम्मत करके मास्साब से ही पूछ लिया जाए। उसे याद आया कि अभी-अभी तो मास्साब नाराज़ जैसे हो गए थे। अगर फिर से सवाल पूछा तो पता नहीं अब सचमुच ही नाराज़ हो जाएँ। फिर भी उसने हिम्मत जुटाई। वह दौड़ते हुए मास्साब के पास गई। मास्साब ने पूछा, "तुमको भी कुछ पूछना है?"

नारंगी संकोच कर रही थी, "नहीं... हाँ...।"

मास्साब सहज थे। वे मखमली लहज़े में नारंगी से बोले, "अरे, डरो मत..."

"मास्साब ये पेड़ और पौधे क्या होते हैं?"

"अच्छा..! ओह... ठीक ही बात को पकड़ा तुमने! देखो, अभी तुम इस चक्कर में मत पड़ो।" मास्साब ने नारंगी के माथे पर हाथ घुमाया।

नारंगी का हौसला बुलन्द हो गया था, "हम तो इनको 'झाड़' कहते हैं। ...फिर पेड़ और पौधे?"

मास्साब सरल अन्दाज़ में बोले, "बस, तो तुम झाड़ ही कहो। देखो, समझ लो...। ये जो बड़े-बड़े... जैसे कि जामुन, पीपल, इमली, नीम... ये

पेड़ हैं। जिनके बड़े-बड़े तने होते हैं। और जैसे कि...” उन्होंने अपने आसपास नज़र दौड़ाई, फिर सोचते हुए कहा, “जो छोटे होते हैं, वे पौधे होते हैं। ...जैसे चना, गेहूँ, मक्का, घास, तुलसी। तुम लोग परेशान क्यों होते हो? तुम तो झाड़ ही बोलो न भई!”

नारंगी के चेहरे पर खुशी थी। टोलियों में हिम्मत लौट आई थी। उन्होंने तय कर लिया कि ‘झाड़’ कहने से बात बन जाएगी।

जमावट दिखने लगी

बच्चे मास्साब के साथ अवलोकन में जुटे हुए थे। उनके हाथों में किताबें और कॉपियाँ थीं। अवलोकन करने के चक्कर में किताबें व कॉपियाँ फिसले जा रही थीं। लच्छू चिल्लाया, “आमने-सामने है इसमें तो! एक इधर, दूसरी उधर। इसको तो जोड़ीदार पत्ती कहेंगे।” यह कहते हुए वह अपनी कॉपी को घुटने पर टिकाकर चित्र बनाने लगा।

छीतर अब टोलियों में घूम रहा था। वह भी पेड़-पौधों की डालियों पर लगी पत्तियों को ध्यान-से देख रहा था। उसने एक टोली को इशारा किया कि उसके पास आकर एक बहुत ही सुन्दर पत्ती को देखे। उसने एक बेल वाले पौधे की नरम-सी कोपल को अपने हाथ में सँभाल रखा था। वह कह रहा था कि उसमें डाली के चारों ओर पत्तियाँ जमी हुई हैं। उसमें गुच्छेदार जमावट है।

तभी एक दूसरी टोली चिल्लाई, “इसमें तो डाली के दोनों ओर एक-एक करके पत्ते जमे हैं। इसे तो अकेली पत्ती कहना ही ठीक होगा।”

जिस टोली से ज़ोर-से चिल्लाने की आवाज़ आई थी, उसमें अब नारंगी शामिल हो चुकी थी। वह बोली, “इतनी बार बेर तोड़-तोड़कर खाए मगर पत्ती की जमावट पर ध्यान ही नहीं गया।”

डमरू बोला, “अब ये तो तुम्हारे ऊपर है कि बेर खाते वक्त तुम क्या सोच रही थी। अगर तुम पत्तों की जमावट के बारे में सोच रही होती तो तुम्हारा ध्यान उस पर ज़रूर जाता। तब तो तुम्हारा ध्यान केवल बेर तोड़कर खाने पर रहा होगा। तुमने सोचा होगा कि पत्तियों से क्या लेना-देना!”

डमरू की बातों को मास्साब गौर-से सुन रहे थे। वे यह बात सुनकर इस सोच में डूब गए कि आखिर बच्चे भी कितनी गहराई-से सोच सकते हैं।

नारंगी की टोली के बच्चे बेर के पत्तों को टहनी पर लगे हुए देख रहे थे। जैसा देख रहे थे वैसा ही बोल भी रहे थे, और वैसा ही कॉपी में लिखा भी जा रहा था। "बेर की पत्ती गोल-गोल। एकदम चिकनी। हरे रंग की। और हाँ, निचली बाजू ऊपरी बाजू से एकदम फर्क - ऊपरी बाजू एकदम हरी, चिकनी और निचली वाली छूने पर थोड़ी-सी मखमली और सफेदी लिए हुए।"

फिर, एक समस्या

बाग के सभी पेड़-पौधों की पत्तियों में जमावट को देखा जा रहा था। टोलियों की आवाज़ों से बाग भर गया था, "...इसमें भी अकेली, इसमें... जोड़ीदार, और इसमें...गुच्छेदार...। मगर इसमें... फिर से गुच्छेदार। और इसमें...।"

जल्द ही लगभग सभी बच्चे एक समस्या में फँसे हुए लग रहे थे। उन्हें कई सारे पौधों के नाम पता नहीं थे। वे जमावट को पहचानने की कोशिश तो कर पा रहे थे, मगर पौधों को नहीं पहचान पा रहे थे। वे एक-दूसरे से पौधों के नाम पूछते। कुछ के नाम पता चल जाते, तो अगले ही चरण में कोई अन्य अनजान पौधा दिख जाता। बच्चों को लगा कि क्यों न छीतर से पूछा जाए। मगर छीतर तो उन पेड़ों के कुछ ऐसे नाम बताता जो एकदम ग्रामीण होते।

बच्चों को एहसास हुआ कि मास्साब के पास इस समस्या का समाधान ज़रूर होगा। मास्साब गाँव के कुछ लोगों से बतिया रहे थे। जब बच्चे उनके पास पौधे लेकर गए, तो वे भी सोच में पड़ गए। उनके पास जवाब नहीं था। असल में, उनको भी बाग के कई पेड़-पौधों के नाम नहीं मालूम थे। उन्होंने उनके पास खड़े होकर बतिया रहे लोगों से पूछा। वे भी उनके स्थानीय नाम बता रहे थे।

मास्साब ने कहा, "देखो, ये जो भी नाम बता रहे हैं, उनको अपनी कॉपी में लिख लो। ये जो बता रहे हैं, यही इनके सही नाम हैं। अरे, तुम्हारे साथ तो छीतर भी है। क्यों न तुम उससे भी पूछो?"

नारंगी बोली, "वो भी तो गाँव के ही नाम बताता है।"

मास्साब हँसते हुए बोले, "अरे, तो इसमें गलत क्या है। गाँव के नाम क्या 'नाम' नहीं होते? बिलकुल, उसकी मदद हमको लेनी चाहिए।"

मास्साब की बात सुनकर छीतर का सीना चौड़ा हो गया। उसके चेहरे पर मुस्कान थी। उसे लग रहा था कि चलो, स्कूल नहीं गए तो क्या, कुछ तो उसको भी अक्ल है। फिर क्या था, टोलियाँ अपनी कॉपियों में पौधों के देसी नाम लिख रही थीं।

पत्तों वाला खेल

लच्छू को ध्यान आया कि मास्साब ने पत्तियों को तोड़कर ले चलने को भी कहा था। पत्तियों को स्कूल ले जाने के लिए वे पुराने अखबार लेकर आए थे। टोली के कुछ बच्चे पुरानी किताबें भी लेकर आए थे, जिनमें पत्तियों को दबाकर ले जा सकें।

अखबारों और पुरानी किताबों में पत्तियों को रखने के बाद, अचानक ही एक साथ कई बच्चे बोले, "चलो खेलें।" फिर क्या था, उनके बीच अब नोक-झोंक होने लगी, खेल के चुनाव को लेकर। मास्साब ने उनकी खेल वाली बात सुन ली थी। वे उनके पास आ गए और बोले, "चलो, पत्तों वाला खेल खेलते हैं।"

लगभग सभी बच्चे बोले, "पहले तो कभी खेला नहीं।"

मास्साब बोले, "तो चलो खेलकर देखते हैं। अपने-आप पता चल जाएगा।"

मास्साब जिस खेल की बात कर रहे थे, वह बहुत जल्द बच्चों को समझ में आ गया। "अरे," शाकिर बोला, "पत्तियों वाला खेल! अरे, पहचान करने वाला खेल!"

खेल में मास्साब भी बराबरी से शामिल थे। सभी घास पर बैठ गए थे। अलग-अलग पत्तियों को गोल घेरे के बीचों-बीच रख दिया गया। अब किसी एक की आँख पर रूमाल की पट्टी बाँधकर, उसे पत्तियों को पहचानने की चुनौती दी गई। जो पत्ती को नहीं

पहचान पाता, उसे सभी मिलकर जो भी कहेंगे, वह करना होता। छीतर सोच रहा था कि उसे इस खेल में कोई नहीं हरा सकता। वह तो सभी पत्तियों को हाथ से छूकर एक झटके में ही पहचान लेगा। और वैसा ही हुआ भी। एक बार तो मास्साब को भी दाम देना पड़ा। सभी बच्चों ने मिलकर मास्साब को गाना गाने को कहा। तब उन्होंने बच्चों के सामने एक अच्छा-सा गाना गाया। जब नारंगी की बारी आई तो एक पत्ती को वह भी नहीं पहचान पाई। इसलिए नारंगी ने भी दाम दिया और एक किस्सा सुनाया, जो उसकी माँ रात को सुनाया करती थी। डमरू ने चुटकुला सुनाया।

मास्साब के निर्देशानुसार टोलियों ने पत्तियों को पुरानी किताबों व अखबारों में दबाकर रख दिया था। इसके पीछे का मकसद बच्चों को पता था। मास्साब ने बताया था कि पत्तियों को पुराने अखबारों या पत्रिकाओं में कुछ दिनों तक दबाकर रखने से, उनका स्वाभाविक स्वरूप बरकरार रहते हुए, वे सूख जाएँगी। मास्साब ने यह निर्देश भी दिया था कि दो-तीन दिनों के बाद पत्तियों को किन्हीं अन्य पन्नों के बीच दबाकर रखना होगा। बच्चों ने यह कार्य बखूबी किया था।

* * *

मास्साब गोंद की शीशी और ड्रॉइंग शीट्स लेकर कक्षा की ओर आ रहे थे। उन्होंने अपने जूते कक्षा के बाहर छोड़े और कक्षा के अन्दर आ गए। कुछ बच्चे अभी भी कक्षा के बाहर ही थे। मास्साब को कक्षा में जाता देखकर वे दौड़े और उन्होंने भी अपने जूते मास्साब के जूतों के बगल में जमाकर रख दिए।

मास्साब ने ब्लैकबोर्ड की ओर मुँह करके कहा, "देखो!" फिर वो सबके सामने मुड़े, और मानो, कुछ और कहना चाह रहे हों। मास्साब कुछ आगे कहें, इसके पहले ही नारंगी बैठे-बैठे बोली, "हमको तो पत्तियों में जमावट कम ही देखने को मिली।" नारंगी की बात का मतलब मास्साब समझ गए थे।

"तो तुम क्या समझ रही थी?"

नारंगी सभी की ओर से बोली, "हम तो समझ रहे थे कि हर झाड़ में अलग-अलग जमावट होती होगी।"

मास्साब उसकी बात को सुनकर बोले, "हर पेड़-पौधे में, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, जमावट का एक खास तरीका तो होता ही है। ये तो तुमने देखा है और अपनी कॉपी में उनके चित्र भी बनाए हैं।"

चित्रों की बात आई तो सभी अपनी कॉपी में चित्रों को देखने में लग गए। डमरू ने पत्ती की जमावट वाले चित्र कॉपी के पीछे के अन्दर वाले कवर पर बनाए थे। उसने सोचा था कि वह बाद में घर जाकर बढ़िया-से चित्र बनाएगा।

"बाग में तो हमको तीन तरह की

ही जमावट मिली।" नारंगी बोली, "तो क्या और तरह की जमावट भी होती हैं?"

मास्साब बोले, "देखो, इसका जवाब भी तुमको ही खोजना है। हाँ, अभी तो खुद के अवलोकन के आधार पर हम इतना ही कह सकते हैं। तो अभी पत्ती वाला पाठ खत्म नहीं हुआ है। असल पाठ तो अब शुरू हुआ है। अब तुमको जहाँ कहीं भी पेड़-पौधे दिखें तो उनमें पत्तियों की जमावट को बारीकी-से ज़रूर देखना।"

कैसी-कैसी पत्तियाँ

"पत्तियों का रंग हरा ही क्यों होता है?" लच्छू ने पूछा।

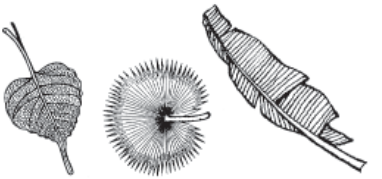

"किसने कह दिया कि हरा ही होता है?" रघु बीच में ही बोला, "अरे, पत्तियाँ चितकबरी भी होती हैं। वह देख!" दरवाज़े से बाहर उसने स्कूल की मेड़ पर लगे पौधे की ओर इशारा किया।

"हाँ, वह तो ठीक ही है। मगर झाड़ों पर लगी पत्तियाँ हरी होती हैं।" डमरू बोला।

मास्साब अब मुस्कराते हुए यह सोच रहे थे कि इन बच्चों को पत्तियों के हरे रंग वाली बात का जवाब कैसे दिया जाए। उनको अभी तो इतना ही बताना चाहिए जिससे कि वे कठिन नाम सुनकर घबरा न जाएँ। "देखो, पत्तियों में हरे रंग की एक चीज़ होती है। हरे रंग की यह चीज़ बड़े कमाल की होती है। इसकी बदौलत ही हम सभी को भोजन मिलता है। जिस हरियाली की बात तुम कर रहे हो, सच में तो यह पत्तियों की ही देन है।"

मास्साब की यह बात भी बच्चों को पूरी तरह समझ में नहीं आई थी। यह जवाब सुनकर बच्चे चुप हो गए थे। मास्साब ने एक बारी तो सोचा कि बच्चों को बता दिया जाए कि पत्तियों में क्लोरोफिल होता है, मगर उन्हें लगा कि यह शब्द शायद बच्चों को भारी लगेगा। वे महसूस कर रहे थे कि बच्चों को पत्तियों के भोजन बनाने वाली बात भी भारी लग रही थी। बहरहाल, पत्तियों के हरे रंग का मामला टलता दिख रहा था।

तभी शाकिर साहित्यिक अन्दाज़ में बोला, "बरसात आते ही हमारा बाग हरियाली से ढँक जाता है।"

शाकिर की बात सुनकर सभी भौचक रह गए।

"अरे, कई पत्तियों को तो हम खाते भी हैं।"

"हाँ, बिलकुल ठीक कह रहे हो, डमरू।" मास्साब ने कहा, "तो अब ऐसा करो कि तुम सब जो पत्तियाँ अपने साथ लाए हो, उनको अलग-अलग गुणधर्मों के आधार पर समूह बनाते हुए कागज़ की शीट पर चिपकाओ, जैसे कि चिकनी पत्ती, नुकीली पत्ती।"

लच्छू अचानक खड़े होकर एक साँस में बोला, "जैसे कि दूध वाली पत्ती।"

मास्साब ने कहा, "शाबाश!"

रघु बोला, "जैसे कि कटे किनारे वाली पत्ती।"

मास्साब के चेहरे पर खुशी थी।

अब भागचन्द्र की बारी थी, "एक तरफ चिकनी, दूसरी तरफ खुरदुरी।"

मास्साब हँसकर अपनी सहमति दर्ज करा रहे थे।

शाकिर - "खुशबूदार पत्ती!"

मास्साब - "बिलकुल ठीक।"

डमरू - "पीली पत्ती।"

भागचन्द्र - "कोई पीली पत्ती भी होती है? गलत बोल रहा है।"

अन्य बच्चे भी भागचन्द्र की हाँ-में-हाँ मिलाने लगे, "पत्ती तो हरी होती है।"

बच्चे आपस में बहस कर रहे थे और मास्साब उनकी बातचीत ध्यान-से सुन रहे थे।

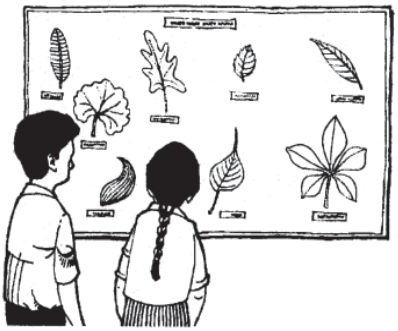

"पीली पत्ती किन पेड़-पौधों में होती है? ...तो डमरू से पूछा जाए। क्या उसने कोई पीली पत्ती देखी है?"

डमरू हिम्मत करके उठा, "फागुन के महीने में जामुन और महुए की पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं।"

अचानक सभी चुप हो गए और सोचने लगे। तभी भागचन्द्र बोला, "राइट।"

मास्साब ने चर्चा में एक नया मोड़ लाने की कोशिश की, "अरे भई, थोड़ी देर पहले ही तो कोई कह रहा था कि पत्तियाँ लाल रंग की भी होती हैं।"

अपने सवाल, अपनी पत्तियाँ

नारंगी हिम्मत जुटाते हुए पूछने लगी, "पत्ती में ऐसा क्या है कि कोई लाल, कोई हरी और कोई चितकबरी होती है?"

मास्साब छत की ओर ताकते हुए बोले, "अच्छा सवाल है। मगर मुझे भी इसका जवाब नहीं मालूम।" फिर कुछ

समय लेकर, कक्षा के एक कोने में रखी हुई कुर्सी पर बैठे हुए, मास्साब बोले, "तुमको तो बताया ही है कि तुम चाहो तो अपने सवाल सवालीराम को चिट्ठी लिखकर भी पूछ सकते हो।" इतना कहकर मास्साब कुर्सी पर से उठे और कक्षा से बाहर चले गए। कक्षा में बच्चे अपनी-अपनी टोलियों में, पत्तियों के गुणधर्मों को चुनकर, कागज़ की बड़ी शीट पर चिपकाने में जुट गए।

पत्तियों को चार्ट्स पर चिपकाकर दीवारों पर लगा दिया गया था। चूँकि ये सब चार्ट बच्चों ने ही बनाकर दीवार पर चस्पा किए थे इसलिए उनकी पहुँच में भी थे। वे उन्हें जब चाहे पास से निहार सकते थे और आसानी-से छू भी सकते थे। कक्षा की दीवारें चार्टमय हो चुकी थीं।

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

प्रथम चित्र: कैरन हैडॉक: पिछले पच्चीस सालों से भारत में शिक्षाविद, चित्रकार और शिक्षक के रूप में काम कर रही हैं। बहुत-सी चित्रकथाओं, पाठ्यपुस्तकों और अन्य पठन सामग्रियों का सृजन किया है और उनमें चित्र बनाए हैं।

सभी चित्र: रंजित बालमुचु: चित्रकारी व ग्राफिक डिज़ाइनिंग करते हैं, इस कोशिश में कि वह समाज के लिए अर्थपूर्ण हो सके। चाईबासा, झारखण्ड में रहते हैं।

संदर्भ में अब तक प्रकाशित सामग्री 23 बाउंड वॉल्यूम में उपलब्ध है। हरेक बाउंड वॉल्यूम का मूल्य 350 रुपए।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिए

पिटारा, एकलव्य

जमनालाल बजाज परिसर

फॉर्चून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,

भोपाल, म.प्र. पिन 462026

फोन: 0755 - 2977770, 2977771

ई-मेल: pitara@eklavya.in ; वेबसाइट: www.pitarakart.in